7 अप्रैल, 2023 को काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान में आयोजित गज "

के अवसर पर माननीय राज्यपाल का संबोधन "उत्सव

भारत की माननीय राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु जी,

माननीय केंद्रीय पर्यावरण वन और जलवायु परिवर्तन मंत्री श्री भूपेंद्र यादव जी,

राज्य के माननीय मुख्यमंत्री हिमंत बिस्व सर्मा जी

माननीय केंद्रीय राज्य मंत्री श्री अश्विनी कुमार चौबे जी,

राज्य के वन एवं पर्यावरण मंत्री श्री चंद्र मोहन पाटोवारी जी,

वित्त मंत्री श्रीमती अजंता नेओग जी,

कृषि मंत्री श्री अतुल बोरा जी,

एवं मेरे प्यारे भाइयों और बहनों,

सबसे पहले, अपनी गरिमापूर्ण उपस्थिति से गज उत्सव के इस कार्यक्रम की शोभा बढ़ाने के लिए मैं माननीया राष्ट्रपति जी का हार्दिक अभिनन्दन करता हू।

मुझे खुशी है कि वन और पर्यावरण मंत्रालय और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय असम राज्य के सहयोग से यहाँ "गज उत्सव" के लिए "गज उत्सव" धूमधाम से मनाया जा रहा है। मैं मेजबान के रूप में असम को चुनने के लिए पर्यावरण और वन मंत्रालय को हृदय से धन्यवाद देता हूं।

मित्रों,
इस क्षण मुझे अत्यंत प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है। राज्यपाल के रूप में पहली बार आज काजीरंगा के अनुपम दृश्य को निकट से निहारने का सौभाग्य मिला है।

प्राचीन काल से हाथी हमेशा हमारे सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन का अंग रहा है। हाथी हमारी संस्कृति का एक प्रतीक भी है। इसलिए हम हाथी हमारे लिए पूजनीय हैं। सदियों से वन एवं जैवविविधता को बनाए रखने में हाथी का एक अह-म रोल रहा

है।

आज विश्व में एशियाई हाथियों की आबादी का लगभग 60% हिस्सा भारत में ही है। भारतीय वन्य जीव संरक्षण अधिनियम, 1972 के तहत हाथी को संरक्षित करना हमारा कर्तव्य बनता है। हाथी संरक्षण के महत्व को देखते हुए ही भारत सरकार द्वारा वर्ष 1991-92 में 'प्रोजेक्ट एलिफेंट' नामक एक परियोजना शुरू की गई थी।

इस प्रकार के आयोजन से लोगों में हाथी के संरक्षण एवं संवर्धन के प्रति जागरूकता बढ़ती है। हमें हाथी की प्रवृति आदि के बारे में भलीसहन-भांति ज्ञान होना चाहिए। यदि हमें हाथी के रहन-, आचार व्यवहार के बारे में-पर्याप्त जानकारी हो तो मनुष्य और हाथी के बीच संघर्ष की निरन्तर बढ़ती घटनाओं को कम किया जा सकता है।

हमारा राज्य असम अपनी हरी भरी पर्यटन संभावनाओं के लिए जाना जाता है। हाथी की आबादी के क्षेत्र में असम अग्रणी रहा है। असम में हमारे पास 317 अधिसूचित आरक्षित वन, 7 राष्ट्रीय उद्यान और 17 वन्यजीव अभयारण्य हैं। ये वन कुल मिलाकर

हाथियों के लिए बेहतर आवास और भोजन प्रदान करते हैं। असम के कला, साहित्य, संस्कृति आदि में हाथी को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। यहां के लोगों के साथ हाथी का अटूट संबंध रहा है। हाथियों के साथ हमारा सहअस्तित्व कई सदियों - पुराना है। हम इस संबंध को संजोते हुए इसे अपने अस्तित्व के अभिन्न अंग के रूप में आगे बढ़ाना चाहते हैं।

हाथी के संरक्षण एवं संवर्धन के साथसाथ अन्य वन्यजीवों की - सुरक्षा भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। इसलिए हमें सभी जीव-जंतुओं की सुरक्षा का भी ध्यान रखना है। हम यह कदापि न भूले कि यह संसार केवल मनुष्य के लिए ही नहीं है बल्कि संसार के सभी जीवों के लिए भी है।

मैं इस शुभ अवसर पर गज उत्सव के आयोजकों को तहे दिल से धन्यवाद देता हूं। मुझे उम्मीद है कि के जरिए "गज उत्सव" हमारे पर्यटनक्षेत्र को और अधिक बढ़ावा मिलेगा।

मैं एक बार फिर माननीय राष्ट्रपति जी को काजीरंगा की महत्वपूर्ण यात्रा के लिए धन्यवाद देता हूं।

जय हिंद।